आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

Febuary 2026, Issue-134, Vol-03

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication** Published by **Gholap Archana Bapu** & Printed & published at Harshwardhan Publication, At.Post. Limbaganesh Dist,Beed - 431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

SCAN ME!

Harshwardhan Publication

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

vidyavarta@gmail.com vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com

Printing Area

www.विद्यावार्ता.कॉम

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 9.47 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. ISO9001-2015 CERTIFIED International Multilingual Research Journal

http://www.printingarea.blogspot.com

Editorial Message

It gives me immense pleasure to present the latest issue of Vidyawarta Research Journal, a platform dedicated to fostering original thought, academic integrity, and interdisciplinary dialogue. Over the years, Vidyawarta has grown into a trusted space where scholars, researchers, and practitioners share insights that contribute meaningfully to the advancement of knowledge.

In an era defined by rapid technological transformation and evolving societal challenges, the value of rigorous research has never been greater. Each paper featured in this issue reflects the commitment of our contributors to explore new perspectives, question existing paradigms, and engage in critical inquiry. Their dedication strengthens the academic community and inspires future scholars to contribute with similar enthusiasm and precision.

As an editorial team, we remain committed to upholding the highest standards of publication ethics, peer review, and scholarly excellence. Our continued mission is to encourage research that not only broadens intellectual horizons but also supports inclusive, sustainable, and impactful development across disciplines.

I extend my heartfelt appreciation to all authors, reviewers, advisors, and readers whose constant support makes Vidyawarta Research Journal a vibrant academic platform. Your contributions help us move forward with renewed energy and a shared vision for quality scholarship.

We look forward to continued collaboration and to receiving more insightful research from you in the future.

— Editor —
Printing Area Research Journal

INDEX

01) Integrating Restorative Justice into the Indian Judicial Structure....
Miss. Aiman Kausar Aamir Ahmed, Jogeshwari (East) Mumbai ||10

02) A Study on Theoretical Aspects of Prosecutorial Roles in the......
Anju Khiriya Charan, Newai, Tonk (Rajasthan). ||16

03) Rash Behari Bose and the Politics of Exile: Organizing Indian.....
Kanchan S. Kumar ||21

04) Compare and Contrast Traditional Criticism with New Criticism
Dr. Kanchi Bajpai, Bilaspur ||25

05) Study of Energy Channels in Indian Knowledge Systems: An....
Kishor Rathod ||27

06) A Study on Teacher Readiness towards Implementing Integrated Teacher....
Dr. Naresh Kumar, Ellenabad ||32

07) A Comparative Study of Health-Related Physical Components among....
Rajesh Kumar, Anuj Pal, Sultanpur, (U.P.) ||37

08) COUSTODIAL VIOLANCE AND NATIONAL AND INTERNATIONAL PRVISIONS
Rangrez Husna S.K Ishaque, Jalgaon, Maharashtra ||41

09) Filtered lenses:The Role of Social Media in Fluencing and Distorting.....
Dr. Sarita Devi, Ara ||44

10) Promoting Tribal culture through Education: A brief review of Santali....
Suman Maji, Prasanta Kisku ||51

11) India–Japan Defense Cooperation in the Pre-Modi Era: A Critical Study
TAHA, Prof (Dr.) Ali Imam, Siwan ||60

12) Indian Constitution and Citizenship
Dr. Tammanna Y., Vijajayapur ||68

13) The Effect of Night Shifts on Cognitive Functioning and Decision.....
Mrs. Taruna Nath, Dr. Meenakshi Sharma, Bhopal ||70

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

14) नांदेड शहरातील माध्यमिक शाळेतील इयत्ता नववीच्या इंग्रजीविषयाची तोंडी.....
डॉ. बाशेट्टी एस.डी., वसरणी नांदेड ||82

15) मराठवाड्यातील संत परंपरा: एक ऐतिहासिक अभ्यास
डॉ. भाऊसाहेब यशवंता जाधव, खुलताबाद, जि. छत्रपती संभाजीनगर ||85

16) महाराष्ट्रातील वस्त्र नगरींचा अभ्यास
जिनमती शांतीनाथ मुरगुंडे, पुणे ||89

17) लावणीची परिभाषा व विविध प्रकार
डॉ. निकिता ब. निर्मळ, वर्धा ||95

18) न्यायाची समन्वयकारी भुमिका स्वातंत्र्य व समता या लोकशाही मुल्यांच्या....
प्रा. डॉ. शशिकांत जे. चवरे, गोंदिया ||98

19) हिन्दी सबके निकट है : वैश्विक परिदृश्य में अवलोकन
डॉ. उत्तम कुमार शुक्ल, सिराथू, कौशाम्बी ||104

20) वंशावलियाँ : भारतीय समाज की सामाजिक संरचना, जातीय पहचान....
डॉ. सुशील कुमार तिवारी, मनेन्द्रगढ़, छ.ग. ||109

21) महिला सक्षमीकरण के संदर्भ में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की भूमिका
प्रा. डॉ. श्याम सोमवंशी, भातकुली जि. अमरावती ||114

22) सूरदास मदनमोहन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
डॉ. दीपक कुमार राय, मणिपाल सिंह, हरदोई, उ. प्र. ||117

23) पर्यावरण अवनयन में कृषि विकास की भूमिका
अजय कुमार शुक्ल, प्रो. पवन कुमार सिंह ||121

24) हरिमोहन गुप्त के साहित्य में भाषा—सौंदर्य
सत्येन्द्र शर्मा, डॉ. गोविन्द प्रसाद अहिरवार, दमोह (म.प्र.) ||126

25) ई—गवर्नेंस में सोशल मीडिया की भूमिका
प्रो. नीता बोरा शर्मा, अविनाश जाटव, नैनीताल ||135

26) हिंदी साहित्यिक कृतियों का फिल्मांतरण
सीमा कुमारी सहाय ||143

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

27) भारतीय समाज में रहने वाले वृद्धों की समस्याएँ और समाधान
प्रीती, डॉ. हेमलता सांगुड़ी, गोविन्द नगर, कानपुर नगर (उ.प्र.) ||147

28) धर्मवीर भारती का यात्रा साहित्य
विवेकानन्द पोद्दार, भागलपुर, बिहार ||152

29) बाल शिक्षा के सन्दर्भ में गिजूभाई बधेका के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता
डॉ. पूनम देवी, कानपुर ||156

30) कृषि उत्पादकता का स्थानिक विश्लेषण : एक भौगोलिक अध्ययन.....
शुभम मिश्रा, डॉ. पुष्पा रानी गंगवार, हरदोई ||161

31) झारखण्ड में कार्यरत महिलाओं हेतु सरकारी योजनाएँ — पहुँच और.....
स्मिता कुमारी, धनबाद ||166

32) आकारिक मूल्यमापन व विद्यार्थ्यांचा व्यक्तिमत्त्व विकास
Govind Suryawanshi ||172

33) इंटरनेट का भारतीय ज्ञान प्रणाली के विकास में भूमिका का समाजशास्त्रीय.....
तरूण कुमार महतो, डॉ. मनमोहन सिंहा, धनबाद ||176

34) ग्रीन जॉब्स (हरित रोजगार) के लिए शिक्षा: जलवायु परिवर्तन....
डॉ. सत्य कुमार छारी, गुना, एम.पी. ||182

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

रचना को दृश्यों के अनुरूप ढालना निर्देशक की आवश्यकता होती है। निर्देशक फिल्म माध्यम की जरूरत के हिसाब से साहित्यकृति में बदलाव लाता है। बस! आवश्यकता यह है कि यह बदलाव मूल रचना के उद्देश्यों को हानी न पहुँचाए। परंतु यदि निर्देशक यदि मूल उद्देश्य को भूल जाता है तो साहित्य कृति का विकृत फिल्मांतरित रूप दिखाई देता है जैसा 'गोदान', 'चित्रलेखा', 'उसने कहा था' आदि रचनाओं के फिल्मांतरण में हुआ है। सभी निर्देशकों ने अपने व्यावसायिक उद्देश्यों के खातिर सभी साहित्यकृतियों से अन्याय किया है ऐसा भी नहीं है। कुछ निर्देशकों ने हिंदी साहित्यकृतियों पर बहुत सफल फिल्मों का निर्माण किया है। जिसमें लेखकीय संवेदनात्मक उद्देश्यों की पूरी तरह से रक्षा की गई है। 'शतरंज के खिलाड़ी', 'सद्गति','तमस, 'तीसरी कसम', 'सारा आकाश', 'नौकर की कमीज' आदि इसी प्रकार की सफल फिल्में है जिनमें साहित्यिक रचनाओं का सफल फिल्मांतरण हुआ है। ऐसी अच्छी कलात्मक फिल्म बनाने वाले निर्देशकों में सत्यजित रे, श्याम बेनेगल, गोंविद निहलानी, बासु चटर्जी के नाम लिए जा सकते हैं।

संदर्भ:

१. मीडिया विमर्श (पत्रिका)— साक्षात्कार— श्याम बेनेगल, दिसंबर—२०१३, पृष्ठ—१६,१७

२. मीडिया विमर्श (पत्रिका) — लेख, चरणसिंह अमी, मार्च—२०१३, पृष्ठ—५९

३. सिनेमा से संवाद—विष्णु खरे, पृष्ठ—१७

४. सिनेमा के सौ बरस— डॉ अन्विता श्रीवास्तव, पृष्ठ—३४९

५. साहित्य और फिल्म— विनोददास, पृष्ठ—१७२

६. हिंदी चलचित्रों में साहित्यिक उपादान—मणि कौल, पृष्ठ—१६२

७. लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ— जवरीमल पारख, पृष्ठ—११२

८. हिंदी साहित्य और सिनेमा —विवेक दुबे, पृष्ठ—१

❑❑❑

27

भारतीय समाज में रहने वाले वृद्धों की समस्याएँ और समाधान

प्रीती

शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग

डी.बी.एस. कॉलेज, गोविन्द नगर, कानपुर नगर (उ.प्र.)

डॉ. हेमलता सांगुड़ी

एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग

डी.बी.एस. कॉलेज, गोविन्द नगर, कानपुर नगर (उ.प्र.)

****

सारांश

इस अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य विशेष रूप से भारतीय समाज में रहने वाले वृद्धों की समस्याओं व उनकी सामाजिक, आर्थिक व मानसिक स्थिति का विश्लेषण करना साथ ही समाधानों की दिशा में नए सुझाव प्रस्तुत करना है। वृद्धों की सुस्त बेजान जिन्दगी ने समाज में उनकी भूमिका को सीमित कर दिया है। इस अध्ययन में वृद्धों की समस्यायें जैसे— अलगाववाद, मायूसी, असहायता, कमजोरी, अनिद्रा, कमजोर दृष्टि व रुग्णता आदि समस्याओं के विषय में जानने का प्रयास करेंगे। जो समस्यायें वृद्धों के जीवन जीने की इच्छाशक्ति को कम कर रही है।

अनुसंधान के परिणामस्वरूप हमने वृद्धों के जीवन में सुधार के लिए कदम उठाने की आवश्यकताओं को उजागर किया है। सामाजिक, आर्थिक, मानसिक रूप से उन्हें सशक्त बनाने के लिए सामाजिक सुधार, वित्तीय सहायता और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं की आवश्यकता है। यह अध्ययन एक नया प्रासंगिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। जिससे समाज व सरकार वृद्धों के प्रति अपने दृष्टिकोण को सुधार सकते हैं ताकि हमारे भारत में वृद्ध अपने जीवन के अन्तिम सफर को आनन्दमय तरीके से जी सके।

शब्द बिन्दु: वृद्धजन, आधुनिक जीवन शैली,

अलगाववाद, वृद्धावस्था

प्रस्तावना

भारतीय समाज में वृद्धजनों की समस्याओं और समाधान पर यह अनुसंधान लेख महत्वपूर्ण और आवश्यक विषयों को ध्यान में रखता है। वृद्धों की संख्या में निरन्तर वृद्धि के कारण भारत में वृद्धावस्था एक विकट सामाजिक समस्या का रूप ले चुकी है। आज के समय में परिवार में उदारवाद का स्थान परिवाद ने ले लिया है। वृद्धों की बढ़ती आबादी गिरती प्रस्थिति और भूमिका का प्रभाव सामाजिक संरचना पर पड़ा है। संयुक्त परिवार व जाति पंचायत व्यवस्था का विघटन हुआ है। जहाँ माता—पिता अपने बच्चों की परवरिश में आनन्द का अनुभव करते थे, वहीं आज की पीढ़ी अपने माता—पिता का तिरस्कार कर रही है। समाज में माता—पिता को प्रताणित करने की कहानियाँ नित्य प्रतिदिन सुनी जा सकती है।

कहीं बेटा अपनी वृद्ध माँ को तीर्थस्थान घुमाने के बहाने छोड़कर चला गया। जिससे वृद्ध माँ घर वापस न आ सके। कहीं बेटे और बहू ने अपने माँ बाप को यह कह कर घर से बाहर कर दिया कि तुम्हें बीमारी हो गई है, जो मेरे बच्चों को लग जायेगी। यह हृदय विदारक कहानियाँ केवल इन बूढ़े माँ बाप की ऐसी ही अपनी दास्तान है, जिनको सुनकर आँखों से आँसू निकल जाये। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि ये सारे कश्त्य करने वाले लोग हम आपके बीच में ही हैं। जो समाज में बेखौफ होकर रहते हैं और उनको अपना कृत्य अपराध नहीं लगता है। कई बार तो बच्चे अपनी आधुनिक जीवन शैली के चलते या फिर अपनी अतिआवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अपने वृद्ध माता—पिता को अकेला छोड़कर घर से बहुत दूर चले जाते हैं और उनके पास आना व उनका भरण पोषण करना कुछ भी जरूरी नहीं समझते, जिससे थक हार कर न जाने कितने वृद्ध अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेते हैं। वे बच्चे जिनके अच्छे भविष्य के लिए माँ बाप अपनी छोटी—छोटी खुशियों को त्याग कर ही माता—पिता अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करते हैं। वही बच्चे अपना सुखी भविष्य मिलते ही अपने माँ बाप को बोझ समझने लगते हैं। वो भी उस समय जब वृद्ध माता—पिता को अपने बच्चों की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। शायद इसी कारण से आज देश में वृद्धाश्रम कम पड़ रहे हैं। आज सरकार को हर जिले में वृद्धाश्रम खोलने की जरूरत महसूस हो रही है। क्या हमारे माता—पिता की जिम्मेदारी सरकार की है? क्या हमारा उनके प्रति कोई उत्तरदायित्व नहीं है? क्यूँ तेज रफ्तार आधुनिकता की दौड़ मे भागते हुए हम अपने कर्तव्यों व संस्कारों को भूलते जा रहे हैं। जब बचपन में हमारे माता—पिता ने हमको कभी अकेलापन नहीं दिया तो हम उन्हें कैसे अकेला तड़पता हुआ छोड़ सकते हैं। जबकि हम सब जानते हैं कि वृद्धावस्था तो खुद अपने में एक बीमारी है। बहुत सी समस्यायें शरीर को सहनी पड़ती है। बीमारियों में पैसा खर्च होने के कारण आर्थिक व सामाजिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। वृद्धावस्था में शरीर इतना दुर्बल हो जाता है कि प्रत्येक वृद्ध को सहायता की आवश्यकता होती है। वृद्धजनों की आर्थिक स्थिति चाहे जो भी हो वह कमजोरी, अनिद्रा, अवसाद आदि की समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं। इस अनुसंधान का प्रयोजन है कि हम वृद्ध जनों की समस्याओं का अध्ययन करें ताकि हम उनमे सुधार की सम्भावनाओं पर प्रकाश डाल सके। इसके लिये हमें विभिन्न स्रोतों से अध्ययन करना चाहिए व योग्य तकनीकों का उपयोग करके अच्छी गुणवत्ता वाली जानकारी को एकत्रित करना चाहिए। अनुसंधान के चरण में हम सुधार के लिए सम्भावनाएँ पहचानेंगे और इस अनुसंधान से उत्पन्न नए दृष्टिकोणों को साझा करेंगे। अध्ययन के परिणामों को समर्पित करने के साथ हम उन सुझावों को प्रस्तुत करेंगे जो वृद्धजनों के जीवन में एक नई रोशनी लेकर आयेंगे और उनकी समस्याओं का समाधान कर सकेंगे।

अंत में इस अनुसंधान के महत्वपूर्ण हिस्सा होने वाले सन्दर्भ और सन्दर्भों का सही तरीके से उपयोग करने के साथ हम इस प्रयास से वृद्धजनों की समस्याओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने और नई दिशा में प्रेरित करने का प्रयास करेंगे।

वृद्धों की राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति:—

वृद्धजनों की समस्याओं को देखते हुए संयुक्त

राष्ट्र संघ ने वर्ष १९९९ को वरिष्ठ नागरिक वर्ष घोषित किया। भारत में एक सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक भारत की वृद्ध आबादी अगले दशक में ४१% तक बढ़ जाने का अनुमान है। यानि २०३१ तक भारत देश में वृद्धों की जनसंख्या १९४ मिलियन हो जायेगी। हमारे देश में वृद्धों के लिए भारतीय संविधान में वृद्धजनों के कल्याण का प्रावधान है। (अनु०—४१) के अनुसार राष्ट्र अपनी आर्थिक क्षमता को ध्यान में रख कर वृद्धजनों हेतु सरकारी सहायता व अधिकार सुनिश्चित करेंगे।

अनुसंधान का प्रयोजन :—

इस अनुसंधान का मुख्य प्रयोजन भारतीय समाज में रहने वाले वृद्धजनों के जीवन में आने वाली समस्याओं के सबसे अच्छे समाधानों को खोजना है। जो निम्न हैं—

१. भारतीय समाज में वृद्धजनों की वर्तमान चुनौतियों को समझना।

२. वृद्धजनों के लिए पारिवारिक, सामाजिक व सरकारी स्तर पर जो सुविधाएँ उपलब्ध हैं उनका मूल्यांकन करना।

३. वृद्धजनों व युवा पीढ़ी के बीच सम्बन्धों का अध्ययन करना।

४. उन समस्याओं की समीक्षा करना जिनसे हमारे वृद्धजन निरन्तर गुजर रहे हैं।

५. वृद्धजनों की सामाजिक, आर्थिक, व्यवहारिक समस्याओं हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन क्षेत्र :—

इस अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत हम वृद्धों की सामाजिक स्थिति और समाज में उनके स्थान की महत्वपूर्णता को समझेंगे। विशेषकर शहरी क्षेत्र के वृद्धों की समस्याओं को जिन्हें अपने जीवन को सुगमता पूर्ण चलाने के लिए बहुत ही संघर्ष करना पड़ता है। वृद्धजनों का जीवन हम कैसे बेहतर बना सकते हैं। हम इसका विवेचन करेंगे। भारतीय समाज में वृद्धजनों के साथ सामाजिक न्याय, समरसता और सुधार का अध्ययन करेंगे।

अत: इस पृष्ठ शोध क्षेत्र के माध्यम से हम नए दृष्टिकोण प्रदान करेंगे।

अध्ययन पद्धति :—

यह अध्ययन भारतीय समाज में रहने वाले वृद्धजनों की समस्याओं और समाधान का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। वर्तमान अध्ययन भारतीय समाज में वृद्धों की समस्याओं के कारण व समाधान के विविध पक्षों के अन्वेषण से सम्बन्धित है। इस शोध में द्वितीयक डेटा लिया गया है। द्वितीयक डेटा विभिन्न प्रकार के स्रोतों से प्राप्त किया गया है जैसे—सरकारी रिपोर्ट, जनगणना के आंकड़े, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्ट, वृद्धजनों पर शोध पत्र, सामाजिक विज्ञान पत्रिकाएँ और एन०जी०ओ० द्वारा प्रकाशित अध्ययन।

यह शोध आलेख मुख्य रूप से वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

पूर्ववर्ती साहित्य की समीक्षा :—

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधकर्ता को नवीनतम ज्ञान के शिखर पर ले जाता है और उसके द्वारा ही वह जान पाता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ रिक्तियाँ है।

१. Helpage India २०११:. हेल्पज इंडिया ने अपने रिपोर्ट में इस ओर ध्यान आकर्षित किया है कि ८८% वृद्धों को उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के समय पर उपचार नहीं मिल पाता है। ७२% वृद्ध आर्थिक समस्याओं से जूझते हैं।

२. नेशनल हेल्थ एण्ड एजिंग ट्रेंड्स स्टडी (NHATS) :- जो २०११ से चालू है जो एक विशेष रूप से वृद्धों के शारीरिक व मानसिक स्थितियों को समझने के लिये बहुत ही अच्छा शोध है। इससे पता चलता है कि वृद्ध लोगों में शारीरिक क्षमता, चलने—फिरने की क्षमता। भोजन करने की क्षमता व स्वास्थ्य सम्बन्धित क्षमता में कमी आती है।

३. डॉ० अरविन्द कुमार जोशी (२००५) :— कार्य (भारत में वृद्धों की बढ़ती जनसंख्या एवं समस्याएँ) एक अध्ययन विलासपुर नगर के सन्दर्भ में है। जिसमें उन्होंने पाया कि परिवार के सदस्यों द्वारा सम्मान में कमी व उपेक्षापूर्ण रवैया आदि प्रमुख समस्याएँ थीं।

भारतीय समाज में रहने वाले वृद्धों की प्रमुख समस्याएं :—

आज हमारे भारतीय समाज में वृद्धों की

समस्याओं के बढ़ने के बहुत से कारण हैं जो आज हमारे समाज की ही देन है। जिसका प्रमुख कारण है पश्चिमीकरण, भौतिकवाद, एकाकी परिवार इन्हीं कारणों से आज हमारे वृद्ध उपेक्षा के शिकार हैं।

१. संयुक्त परिवार का विघटन होना:—

आज हमारे समाज में संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है। जिसका प्रमुख कारण भौतिकवाद भौतिकता की तलाश में आज हमारी पीढ़ी नगर की ओर प्रस्थान कर रही है और महानगरों में जाकर एकाकी परिवार के साथ घुटन भरे माहौल में जी रही हैं और छोड़ रही है। अपने वृद्ध माँ—बाप गाँवों में जो अपने जीवन की समस्याओं से अकेले ही जूझते रहते हैं।

२. वृद्धजनों के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या:—

वृद्धावस्था अपने में ही एक बीमारी है। वृद्धावस्था में हमारा शरीर कई बीमारियों से ग्रसित होता है। कार्य क्षमता में बहुत कमी आती है। उनको दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। अत: स्वास्थ्य वृद्धावस्था में एक बहुत बड़ी समस्या है।

३. आर्थिक समस्याएँ:—

वृद्धावस्था में वृद्धों के आर्थिक स्रोत कम हो जाते हैं या फिर खत्म ही हो जाते हैं। अत: उनको आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

४. भावात्मक अकेलापन:—

माँ—बाप अपने बच्चों को बड़ा करके जब काबिल बना देते हैं और बच्चे अपने जीवन के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपने माँ बाप को छोडकर बाहर चले जाते हैं तब वृद्ध माँ—बाप को तनाव व अकेलापन का सामना करना पड़ता है।

५. पीढ़ीगत खाई:—

वृद्ध व युवा पीढ़ी के बीच विचारों का मतभेद बहुत ज्यादा होता है। जो युवा पीढ़ी व वृद्धों को एक—दूसरे से अलग करता है।

६. वृद्धावस्था में वृद्धों की देखभाल और सम्मान में कमी:—

परिवार में वृद्धों को बस घर के एक कोने में बैठा दिया जाता है। उनको घर में महत्व नहीं दिया जाता। वृद्ध लोग अपमान और तिरस्कार का सामना करते हैं।

वृद्धजनों के जीवन में सुधार की सम्भावनाएँ:—

वर्तमान समय में वृद्धों की बढ़ती हुई समस्या के पीछे बहुत से कारण हैं। इन सब कारणों को देखते हुए आज हमारे सरकारी व गैर सरकारी संगठन सभी बहुत ही सजग हो गये हैं। सभी लोग मिल कर वृद्धजनों के लिये बहुत ही कल्याणकारी कार्यक्रमों को सुचारु रूप से चला रहे हैं और चलाने का प्रयास कर रहे हैं। अनु०—४१ व ४६ वृद्धजनों के लिये संवैधानिक प्रावधान प्रदान करते हैं।

दण्ड प्रक्रिया संहिता (CRPC) :.

धारा १२५ के अन्तर्गत वृद्ध माता—पिता अपने बच्चों से भरण—पोषण की माँग कर सकते हैं। ये बाध्यकारी प्रावधान है।

भारत सरकार द्वारा वृद्धजनों के जीवन में सुधार के लिये की गई पहलें :—

१.SACRED पोर्टल :— ६० वर्ष से अधिक आयु के वृद्ध इस पोर्टल पर पंजीकरण करवाकर रोजगार व कार्य अवसर के लिए आवेदन कर सकते हैं।

२. एल्डर लाईन:— यह वरिष्ठ नागरिकों के लिए राष्ट्रीय हेल्पलाईन १४५६७ यह सभी राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों द्वारा लागू किया गया एक टोल फ्री नम्बर है— इसका उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों से जुड़ना व उनकी समस्या सुनना है।

३. राष्ट्रीय वयोश्री योजना:— यह योजना गरीबी रेखा से नीचे के उन वरिष्ठ नागरिकों के लिये हैं। जो विकलांगता से पीड़ित हैं।

४. प्रधानमंत्री वय वंदन योजना:— भारतीय नागरिक जो कि ६० वर्ष की उम्र से ऊपर के हैं य वो प्रधानमंत्री वय वंदना योजना (पी.एम.वी.वी.वाई.) में अपने धन का निवेश करने के पात्र हैं। यह योजना १० साल के लिए ८% प्रतिवर्ष मासिक देय (८.३०:वर्ष) का निश्चित रिटर्न सुनिश्चित कराती है।

५. वयोश्रेष्ठ सम्मान:— इसकी स्थापना सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय ने वर्ष २००५ में की और इसे वर्ष २०१३ में राष्ट्रीय पुरस्कारों की श्रेणी में लाया गया।

६. वरिष्ठ नागरिकों का भरण पोषण व कल्याण (MWPSC) अधिनियम २००७ :— इस

अधिनियम में वयस्क बच्चों व रिश्तेदारों को उनके माता—पिता व वरिष्ठ नागरिकों की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए मासिक भरण पोषण का भुगतान करना अनिवार्य है।

७. आयुष्मान भारत का विस्तार वरिष्ठ नागरिकों के लिये :— केन्द्र सरकार ने २९ अक्टूबर २०२४ से यह कदम उठाया है कि ७० वर्ष से अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों को ५ लाख रूपये का इलाज मुफ्त करवा सकते हैं।

८. वरिष्ठ नागरिकों के लिये कर लाभ में बदलाव:— बजट २०२५ में वरिष्ठ नागरिकों के लिये ब्याज आय पर कर कटौती की सीमा को रू० ५०,०००/— से बढ़ाकर १,००,०००/— रूपया कर दिया गया।

वृद्धजनों के जीवन में समस्याओं के समाधान के लिये आगे की राह :—

यह विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है, जो निम्नवत् है :—

१. वृद्धजनों के साथ परस्पर स्वस्थ्य संवाद और सम्मान:— परिवार में हमें अपने वृद्धजनों को बोझ नहीं बल्कि (अनुभवों व ज्ञान का भण्डार) मानना चाहिए।

२. स्कूलों में पीढ़ी सम्बन्ध कार्यक्रम:— स्कूलों में दादा—दादी दिवस भी रखा जाना चाहिए।

३. सामाजिक कार्यों में वृद्धजनों की भागीदारी रखी जाये:— वृद्धजनों को सामाजिक कार्यों, सांस्कृतिक कार्यों में भाग लेने के लिये उत्साहित करना चाहिए।

४. वृद्धजनों की समय—समय पर काउन्सिलिंग करवाना:— परिवार व समाज को चाहिए कि वृद्धजनों की काउन्सिलिंग करवाते रहें जिससे वे अवसाद व चिंता में न फँस सके।

५. वृद्धाश्रमों का आधुनिकीकरण:— वृद्धाश्रमों को आधुनिक किया जाये जिससे वृद्ध सम्मान जनक जीवन जी सके।

६. वृद्धजनों को डिजिटल साक्षर बनाना:— वृद्धजनों को डिजिटल सेवा प्रशिक्षण जरूर देना चाहिए। जिससे वे अपनी बैंक व मोबाइल आदि का कार्य कर सके।

७. अकेले रह रहे वृद्धों के लिये विशेष सहायता केन्द्र का निर्माण:— हर जिले, कस्बे व नगर में करना चाहिए।

निष्कर्ष :—

भारत देश में संयुक्त परिवार के विघटन के साथ—साथ परिस्थितियाँ बहुत तेजी से बदली हैं आज की पीढ़ी के बच्चे अपने मूल्य और संस्कार सब भूल चुके हैं। एकल परिवारों में बच्चे अपने माता—पिता को साथ नहीं रखना चाहते हैं। ऐसे में वृद्ध कहाँ जाएं। जिस पीढ़ी ने अपना ऊर्जावान समय देश, समाज व परिवार के लिए लगा दिया, वही वृद्ध आज उपेक्षा के शिकार हैं। अत: इसके लिये सरकार को इस संबंध में बनाये गये कानूनों को सख्ती से लागू किये जाने की आवश्यकता है ताकि वो किसी पर आश्रित न रहें।

संदर्भ सूची

1- Pandey, Sandhika Vridhasram mein vridho ke saririk avam mansik swasthya ka adhyan 2022http://hdl.handle.net/10603/496146

2- Saroj vermaA sociological study of various aspects of old age home and old aged persons 2018http://hdl.handle.net/10603/31861

3- Dr. Muhammad mushtkeemKanpur nagar ke vridhashram mein rehne wale vridhjano ki stithi ka adhyann 2022www.questjournal.org

4- Dr. zakia raftVridhashram mein rehne wale vridho ka samajshastriya adhyannhttps://doi.org/10.22271/allreasearch,2020.v6.ide.9880 2020

5- Arvind joshihttps://aclanthology.org

6- http://sabkikhabar.com/article22354

7- www.helpageindia.org

8- www.nai.nih.gov

९. राय, सत्येन्द्र नाथ (२०१६) वृद्धावस्था में सुखी जीवन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ० ५३—५६

१०. वन्दना रानी वृद्धजन समस्याएँ एवं प्रत्याशाएँ प्रकाशित शोध प्रबन्ध एम०जे०पी० रुहेलखण्ड वि०वि० बरेली १९९८

११. संगीता रचियता (१२ मार्च २०१९) वृद्धावस्था की समस्या एवं समाधान (भारतीय समाज के सन्दर्भ में) १५५: २४५६.४३९७

१२. डॉ० सुषमा कुमारी ;२०२०: ६;१० : ७७९.७८३ www.allresearchjournal.com

१३. आहूजा, ''राम : सामाजिक समस्यायें'', रावत पब्लिकेशन, जयपुर